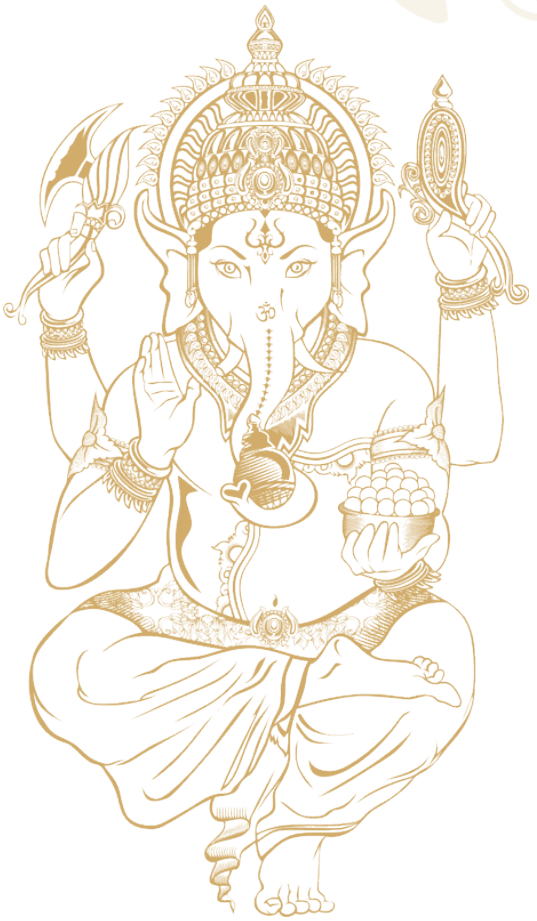

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
09/04/2000	जन्म तिथि	04/05/2000
रविवार	दिन	गुरुवार
घंटे 09:05:00	जन्म समय	06:17:00 घंटे
घटी 08:48:06	जन्म समय(घटी)	02:32:04 घटी
India	देश	India
Puri	स्थान	Madhubani
19:48:00 उत्तर	अक्षांश	26:27:00 उत्तर
85:52:00 पूर्व	रेखांश	85:08:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:13:28	स्थानिक संस्कार	00:10:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:33:45	सूर्योदय	05:09:46
18:02:45	सूर्यास्त	18:23:08
23:51:23	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:26

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 6वर्ष 8मा 25दि		23:16:31	वृष	लग्न	वृष	08:05:11	शुक्र 12वर्ष 10मा 18दि	
गुरु		25:44:14	मीन	सूर्य	मेष	20:00:35	चन्द्र	
03/01/2025		23:50:14	वृष	चंद्र	मेष	18:04:38	23/03/2019	
03/01/2041		18:35:37	मेष	मंगल	वृष	06:18:11	23/03/2029	
गुरु	21/02/2027	00:30:50	मीन	बुध	मेष	14:01:55	चन्द्र	22/01/2020
शनि	03/09/2029	17:10:40	मेष	गुरु	मेष	23:02:02	मंगल	22/08/2020
बुध	10/12/2031	09:04:20	मीन	शुक्र	मेष	09:43:55	राहु	20/02/2022
केतु	15/11/2032	22:35:55	मेष	शनि	मेष	25:42:30	गुरु	22/06/2023
शुक्र	17/07/2035	06:08:19	कर्क व	राहु व	कर्क	03:41:06	शनि	21/01/2025
सूर्य	04/05/2036	06:08:19	मक व	केतु व	मक	03:41:06	बुध	22/06/2026
चन्द्र	03/09/2037	26:06:53	मक	हर्ष	मक	26:46:54	केतु	21/01/2027
मंगल	10/08/2038	12:28:55	मक	नेप	मक	12:42:38	शुक्र	21/09/2028
राहु	03/01/2041	18:52:44	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	18:25:14	सूर्य	23/03/2029

लग्न-चलित

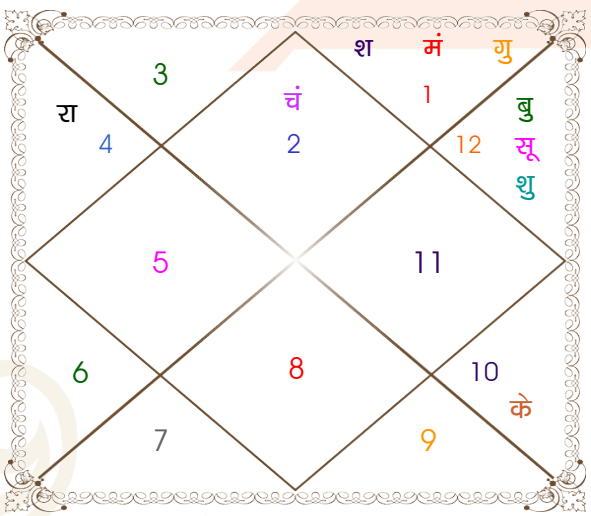

लग्न-चलित

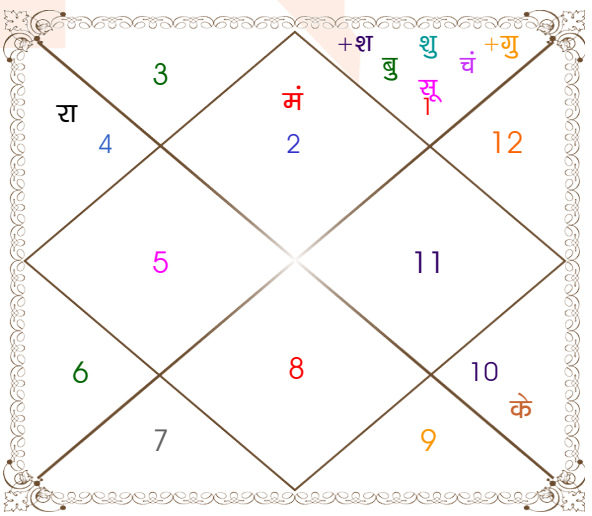

Jyotishacharya Dr.Sunil Srivastava
Jyotish Vigyan Anusandhan Kendra ,Town Club Field , Madhubani
9431220126

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सर्प	गज	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	मंगल	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	14.50		

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Mr. का नक्षत्र मृगशिरा है।

Mr. का वर्ग मृग है तथा Ms. का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Mr. कि कुण्डली में द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Mr. कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।

न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु Mr. कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Ms. कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Ms. कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Mr. कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।